

प्रो. सुखबीर सिंह सिंघल एवं बद्रीनाथ आर्य की वाँश शैली में नारी की अभिव्यक्ति : एक अध्ययन

शैफाली राणा

(शोधार्थी)

गो. दा. हि. गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद

एम् जे पी रुहेलखंड विवि बरेली उ. प्र.

प्रो. डॉ. पुनीता शर्मा

(पूर्व विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग)

गो. दा. हि. गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद

एम् जे पी रुहेलखंड विवि बरेली उ. प्र.

सारांश

भारतीय चित्रकला के विकास क्रम में नई सदैव एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उपस्थित रही है। नारी मनुष्य की अर्धांगिनी मानी जाती है यह भावना आज से अपितु प्राचीन काल से मान्य रही है जिस तरह से नारी के बिना भगवान की सृष्टि को अधूरी है। उसी प्रकार कला जगत नारी अंकन के बिना अधूरा है भारतीय चित्रकला में नारी का चित्रण सदैव एक केंद्रीय विषय रहा है प्राचीन गुफाओं से लेकर आधुनिक चित्रकार तक नारी को कभी सृष्टि शक्ति सौंदर्य और करुणा का प्रतीक तो कभी धार्मिक और सांस्कृतिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रा गेतिहासिक काल में गुफाओं की संरचना और लोकशैली में नारी की उत्पत्ति संस्कृति और श्रम शक्ति के रूपों की रचना की गई है शास्त्रीय वास्तुकला मुगल शैली राजस्थानी शैली पहाड़ी शैली में नारी का सौंदर्य शृंगार राग रागिनी जैसे रूपों के दर्शन होते हैं। प्रेम भक्ति और शृंगार रस की प्रधानता रही है। धार्मिक चित्रण में नारी देवी के रूप से दिखाई देती है जैसे पार्वती लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती आदि इनमें आध्यात्मिक शक्ति एवं संरक्षण के भाव प्रमुख हैं। आधुनिक काल में कलाकार उन्हें नारी को केवल सौंदर्य का प्रतीक बताया जिसमें उनकी संघर्षशीलता आत्मनिर्भरता और सामाजिक भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है। भारतीय चित्रकला में नारी का चित्रण सौंदर्य शक्ति स्वभाव करुणा और सामाजिक यथार्थ का आदर्श है। जिसके अनुसार समय और परिस्थिति बदल रही है।

कुंजी मूल शब्द - वाँश शैली, नारी, कलाकार

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य प्रो. सुखबीर सिंह सिंघल एवं बद्रीनाथ आर्य के चित्रों में नारी अंकन एक अध्ययन के बारे में जानना है भारतीय वाँश चित्रकला के विकास में दोनों ही चित्रकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनके चित्रों में नारी केवल सौंदर्य का विषय न होकर सामाजिक जीवन मानवीय संवेदना पारिवारिक संबंधों तथा सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में दिखाई देती है यह शोधपत्र भारतीय वाँश चित्रकला में नारी के बहुआयामी स्वरूप को समझने में सहायक होगा।

शोध पत्र का महत्व

यह शोधपत्र भारतीय वाँश चित्रकला में नारी अभिव्यक्ति से संबंधित शोध के लिए उपयोगी आधार प्रदान करेगा इससे विद्यार्थी शोधार्थी कला समीक्षकों और कलाप्रेमियों को दोनों कलाकार की रचनात्मक दृष्टि तथा नारी के प्रति संवेदनशीलता को समझने में सहायता मिलेगी साथ ही यह शोध इस प्रकार तथ्यों को स्थापित करने में सहायक होगा कि वाँश कला में नारी केवल एक चित्र आकृति नहीं बल्कि मानवीय संवेदना सामाजिक यथार्थ सामाजिक चेतना और जीवन अनुभव की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है ।

परिचय

भारतीय विचारधारा के अनुसार चित्रकार एक कला संसार का प्रजापति होता है वह अपनी रुचि के अनुसार ही इसकी रचना करता है यद्यपि कला निर्माण में कलाकार की प्रतिमा एवं कल्पना का प्रतिफल है तथा भी उसकी कला एवं कल्पना का मूलभूत आधार भौतिक जगत ही होता है प्रत्येक युग का कलाकार अपने युगबोध एवं परिवेश के साथ साथ सांस्कृतिक चेतना से भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता भारतीय कलाकार भी इसका अपवाद मात्र हैं स्त्री को माता प्रेमिका और पत्नी के रूप में वर्णित करने के लिए सुदृढ़ परंपरा रही है भक्त के लिए तो वह माही है पर वह एक कवी नारी के श्रृंगारपूर्ण वर्णन को अपनी भक्ति कम माध्यम बना लेता है क्योंकि काम भावना को लेकर कोई अपराध बोध उसके मन में नहीं है।

प्रारंभ से नारी तो उसके साथ ही थी बल्कि नारी केवल उसके साथ ही नहीं उसके सभी कार्यों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में सहयोगी भी थी नारी को आध्यात्मिक साथी के रूप में न केवल मान्यता दी गई वरन पूछने भी माना अतः उसने नारी चित्र वै मूर्ति की रचना कर उसकी पूजा आरंभ कर दी अपने आकर्षण का मुख्य केंद्र नारी को जननी का रूप देकर वह नारीको ईश्वर की शक्ति मानकर पूजने लगा।

सृष्टि का उद्गम कामिनी है और कामिनी ही कला को जन्म देती है। भारतीय कला जगत विषय की कई पहलू में जिसमें नारी अपना उच्च स्थान संजोये हुए है। भारतीय पूरा मनुष्य ने प्राचीन कालीन नारी को सम्मान दिव्य और देवी की भव्य स्तुति की नारी को संसार का बहुमूल्य रत्न कहा गया है। जब कला और नारी का परस्पर मिलन हो तो मणिकाचल सहयोग कहा जा सकता है भारतीय कला धर्म संस्कृति एवं आदर्श आदि का स्रोत नारी है नारी नर के लिए सदा ही आकर्षक की वस्तु रही है नारी प्रेरणा का स्रोत रही है। आदि मानव जब इस धरती पर आया होगा तभी नारी के अद्भुत सौंदर्य पर मुग्ध हुआ होगा साहित्यकारों कलाकारों एवं दार्शनिकों के लिए नारी सदा ही चिंतन मनन एवं कौतुहल का विषय रही है। नर नारी पति पत्नी व प्रेमी प्रेमिका की विभिन्न अवस्थाओं चित्रकारों साहित्यकारों मूर्तिकारों का रोचक विषय रहे हैं।

चित्रकला के साथ नारिका अटूट संबंध रहा है कला के लिए और जीवनकाल के लिए नारी जीवनकाल का दूसरा रूप है कला की सौंदर्य अभिव्यक्ति में नारी चित्रण हो जाता है। चित्रकला की किसी भी क्षेत्र

पर दृष्टि डालने पर हम पाते हैं कि चित्रकार ने अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए किसी ना किसी रूप में नारी का चित्रण अवश्य किया है। प्रारंभ में नारी का एक चित्रण देवी के रूप में किया गया उसे पूजा गया समय और परिस्थितियों के अनुसार नारी के रूपों में परिवर्तन होता गया और चित्रकला में भी भिन्न भिन्न रूप अवतरित हुए उदाहरण देवी के पश्चात माँ पत्नी अर्धांगिनी प्रेसी दासी वीरांगना नृत्य की नायिका गायिका आदि नारी रूपों का चित्रण मिलता है।

भारतीय कलाकार अपने नारी रूप में लोकोत्तर सौंदर्य की प्रतिष्ठा करना चाहते थे इसीलिए अजंता एलोरा शून्यकालीन व अन्य शैलियों के कलाकारों ने नारी के रचना का सूक्ष्म अध्ययन ही नहीं किया बल्कि नारी मन के भीतर झांक कर उसकी पीड़ा को भी मार्मिक रूप में रूपयांतित करने का प्रयास भी किया है।

कलाकार ने आत्मा के आंतरिक चैतन्य भागों की अभिव्यक्ति के सात लाक्षणिक तथ्यों के सांनिध्य में श्रृंगारिक उत्पादनों के किंचित अवलंबन से नारी रूप भेद सफल एवं सूक्ष्म रूप से अभिव्यंजित हो सका है।

वेशभूषा आभूषण वैध पुष्पा लंकरण केस विन्यास मुख्य रचानाओं एवं प्रसाधनों के प्रभाव से कला संबंधी भाव चेतना निश्चित से अभिव्यक्त हुई है।

भारतीय कलाओं में नारी की चतुर्विद्या का अपूर्ण समागम है। और इन विधवाओं में लाक्षणिक रूप तात्त्विक गुणों के आधार पर ही नारी के अनेक रूपों की कल्पना साकार हुई है। माँ वे अबला राजमहिशी राजकन्या अपसरा अनुवर्तिका परिचयिका तरुवर देवी वीरांगना श्रृंगारिक नायिका आदि सौंदर्य की अभिव्यक्ति नारी के माध्यम से की गई है सौंदर्य दर्शन ही कला का उद्देश्य है काव्य की रचताओं ने नारी के विविध रूप अवस्थाओं मनोदशाओं तथा स्वभावों का बड़ा सहज वर्णन प्रस्तुत किया है। नारी के इसी अध्ययन को नायिका भेद कहा जाता है। श्रृंगार की शास्त्रीय परंपरा में नायिकाओं के अंग प्रत्यांगों के आधार पर चार भेद किए हैं पद्मनी चित्रण संखणी हस्तियनी कामसूत्र में व्यावहिक कन्या पारिवारिक तथा वैश्विक प्रकरण में नायिका का सा विस्तार वर्णन किया है। अवस्था के अनुसार नायिकाओं के आठ प्रहर बताए गए हैं।

- 1) प्रेषितपतिका जिसका प्रेमी व्यापार या कार्य के लिए विदेश गया है नायिका उसका इंतजार करता है।
- 2) कल अंत रीता जिसने क्रोध से अपने पति को नकार दिया बाद में पश्चाताप कर रही है।
- 3) खंडिता जिसका पति रात दूसरी स्त्री के पास बिताकर सुबह वापस आया है।
- 4) विप्रलब्धा मिलने के स्थान पर प्रेमी के न मिलने पर नाराज होकर अपने आभूषण उतारकर फेंक देती है।
- 5) उत्का जो अपने प्रियतम के प्रेम पर विश्वास नहीं करती और उसकी अनुपस्थिति में दुखी होती है।

6) वासक सज्जा अपने प्रेमी के आगमन से पूर्व स्वागत की सभी तैयारी के साथ श्रृंगार किए बैठी नायिका।

7) स्वाधीनपतिका जो अपने पति को वश में किए हैं।

8) अभिसारिका मिलन स्थान की ओर जाती हुई नायिका अपने प्रेमी से।

भारतीय कला में सदैव नारी को सौंदर्य सिद्धांत के अनुसार ही चित्रित किया गया है उसे शालभंजिका व मिथुन के रूप में खूब चित्रित किया है। प्राचीन काल में नारी का चित्रण मुख्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में मिलता है सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला और कला में मातृदेवी की अवधारणा नारी की ओर बढ़ता और मातृत्व से जुड़ी मान्यताओं को दर्शाता है जनता की गुफाओं के वितीय चित्रों में स्त्रियों को राज दरबार धार्मिक प्रसंग पारिवारिक जीवन तथा दैनिक गतिविधियों में दिखाया गया है। मध्यकाल के चित्रकला में नारी का स्वरूप धार्मिक और काव्यात्मक भावनाओं से अधिक जुड़ा हुआ दिखाई देता है। राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में राधा गोपियों तथा नायकों के माध्यम से प्रेमभक्ति विरय और सौंदर्य को अभिव्यक्त किया गया है मुगल चित्रकला में शाही स्त्रियां राजदरबार की महिलाओं तथा सामान्य जीवन से संबंधित स्त्री पात्रों का चित्रण हुआ है। इस काल में नारीप्राय सौंदर्य और भावनात्मक संवेदनाओं की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत की गई है।

औपनिवेशिक एवं आधुनिक काल के आरंभ में भारतीय कलाकारों की दृष्टि में परिवर्तन आया राजा रवि वर्मा ने पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्त्रीपात्रों को यथार्थवादी शैली में चित्रित किया उनकी स्त्रियां भारतीय परंपरा गरिमा एवं सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। बंगाल स्कूल के कलाकारों ने भी नारी को भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय भावना के प्रतीक के रूप में चित्रित किया।

आधुनिक और समकालीन भारतीय चित्रकला में नारी केवल सौंदर्य का विषय नहीं रही बल्कि उसकी सामाजिक स्थिति संघर्ष स्वतंत्रता श्रम पहचान और संवेदनाओं को भी चित्रित किया गया। अमृता शेरगिल ने भारतीय स्त्रियों के जीवन और उनकी भावनाओं को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है।

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक सभी कलाओं में प्रत्येक कलाकार ने अपने सभी माध्यमों में नारी आकृति अवश्य अंकित की है ऐसा प्रतीत होता है कि कलाकार निर्णारी अंकन के साथ ही कृति की पूर्णता को स्वीकार है। इनकी नारी न केवल नारी है वे सौंदर्य का अवतार बनकर आई हैं। यही कारण है कि कला में यह कृतियां कहीं भी वासनामय दृष्टि से नहीं देखी गई है नारी का अंकन अर्द्धनग्न या वस्त्रों से आवृत जहाँ भी जैसा भी किया गया है। अभद्रता या विलासिता नहीं आने पाई है।

पुरुष जिस प्रकार नारी से आकर्षित नजर आता है उसी प्रकार है। कला से भी जुड़ा नजर आता है नारी को दिया गया पहला सम्मान भी उसने अपनी कला को माध्यम बना कर दिया चित्रों में नारी रूप साधारण क्रम चक्र में बनते बनते मुख्य रूप से बनने लगे देखते ही देखते नारी का संपूर्ण अस्तित्व उसकी कला में झलकने लगा।

इसी प्रकार वॉश शैली के कलाकारों में नारी चित्रण की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण विषय रहा है।

वाँश शैली

वाँश चित्रण बंगाल शैली की विशेषता रही है। बंगाल स्कूल के चित्रकारों ने अपने चित्रों में जलरंग टेम्परा रंग इंक का प्रयोग किया है। परंतु उनके चित्रण विधि में भारतीय चीनी जापानी आदि प्रणालियाँ का अनुसरण किया गया है चित्रकार को वाँश पद्धति में चित्र बनाने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले पेपर की आवश्यकता होती है। मुख्यतः रूप से कैसे कागज फैब्रियानो कैंट पेपर आदि का प्रयोग किया जाता है। सबसे पहले कागज पर चित्र बनाया जाता है जिसमें रेखा एकदम सटीक होनी चाहिए उसके ऊपर रंग फैलाकर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसके पश्चात चित्र आकृतियों को उभारने के लिए रेखांकन को पुनः अन्य रंग से भर दिया जाता है यह प्रक्रिया बारंबार दोहराने के बाद चित्र पूर्ण होने पर सफेद रंग तथा छाया का उपयोग किया जाता है। लाल और काले रंग का उपयोग रूपरेखा बनाने के लिए किया जाता है वाँश पद्धति में धुंधलापन प्रभाव ही चित्र को आकर्षक बनाता है। यह भौतिक रहस्य में वातावरण का निर्माण करता है।

प्रोफेसर सुखवीर सिंह सिंघल - प्रो. चित्रकार सुखवीर सिंह सिंघल की चित्र दृष्टि में मानवीय जीवन सामाजिक परिवेश भावनात्मक अनुभव विशेष भूमिका दिखाई देती है। उनके चित्रों में नारी को केवल बाह्यरूप सौंदर्य के आधार पर देखने के स्थान पर उसके भाव जगत और स्थिति को समझने का प्रयास किया जा सकता है। उनके नारी चित्रण में भारतीय जीवन की सहायता पारिवारिक संबंधों की आत्मकथा स्त्री की संवेदनशीलता तथा उसके जीवन से जुड़े विभिन्न अनुभवों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। चित्रकार ने नारी अंकन का अर्थ केवल स्त्री की आकृति को चित्रित करना नहीं इसके अंतर्गत नारी की शारीरिक स्वरूप के साथ साथ उसकी मानसिक अवस्था भावनाओं सामाजिक स्थिति कार्यभूमि तथा सांस्कृतिक पहचान को भी व्यक्त किया है कलाकार की कला परंपरा में नारी कभी मातृत्व का कभी प्रेम का प्रतीक रही है तो कभी प्रेम और करुणा की शक्ति और साहस की तथा कभी सामाजिक जीवन की सक्रिय सहभागी के रूप में प्रस्तुत की गई है। कलाकार नारी की भूमिका और अधिक व्यापकता के माध्यम से सामाजिक का सामान्य पारिवारिक संबंध संघर्ष श्रम अकेलापन आशा संवेदना और आत्मसम्मान जैसे विषयों को व्यक्त करते हैं। इस दृष्टि से सुखवीर सिंह सिंघल के नारी चित्रण को केवल सौंदर्यपरक दृष्टि से देखना पर्याप्त नहीं होगा बल्कि उन्हें सामाजिक और मानवीय संदर्भ में समझना आवश्यक होगा कलाकार के चित्रों में नारी को एक जीवंत मानवीय चरित्र के रूप में देखने की प्रवृत्ति को उजागर किया गया है आकृति की बाहरी सजा से अधिक उसकी मुद्रा चेहरे के भाव शरीर की स्थिति तथा आसपास के वातावरण के माध्यम से भाव व्यक्त किया गया है चित्रों में नारी को कहीं शांत दिखाया गया है तो कहीं चिंतनशील कहीं पारिवारिक जीवन से जुड़ी हुई और सामाजिक परिवेश के साथ सक्रिय के रूप में चित्रित किया गया है उदाहरण हेतु चित्र प्रथम मिलन शैल सरिता सिलीगुड़ी चाक पूजन विदाई वधुआगमन मान भंजन तट तटनी खुद घोर राम जन्म बधाई राम विदाई उमा परीक्षा अडिग लक्ष्मण काम अर्जुन विसर्जन श्रीपति आदि में नारी आकृतियों को बहुत सुंदर तरीके से चित्रित किया गया है।

बद्रीनाथ आर्य- चित्रकार को समझने के लिए उनकी कला दृष्टि को मानवीय संवेदनाओं के संदर्भ में देखना आवश्यक है। उनके चित्रों में आकृतियों का प्रयोग केवल किसी घटना या कथा को देखने के लिए प्रस्तुत नहीं किया जाता बल्कि आकृतियां वातावरण और भाव को निर्मित करने में योगदान देती है नारी आकृति भी इसी कलात्मक रैली का हिस्सा है उनके जीवन में नारी को कभी पारंपरिक भारतीय जजीवन से जुड़ी हुई आकृति के रूप में तो कभी पौराणिक कथा के पात्र के तो कभी गीत गोविंद ग्रंथ के कृष्ण लीलाओं में राधा के रूप में तो कभी गोपियों के रूप में तथा कभी सामान्य मानवीय जीवन की संवेदनशील उपस्थिति के रूप में देखा जा सकता है। उनकी कला में नारी के चेहरे मुद्रा वाँश और आसपास के वातावरण के माध्यम से और आसपास के वातावरण के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का संकेत मिलता है बद्रीनाथ आर्या ने अपने चित्रों में नारी के सौंदर्य कोष की सहायता से भाव भंगीमा और व्यक्तित्व के साथ जोड़कर चित्रित किया है नारी आकृतियों में अलंकरण के साथ साथ आकृति की सरलता और भावनात्मकता भी महत्वपूर्ण दिखाई देती है चेहरे की शांत अभिव्यक्ति आँखों की दिशा सिरकी मुद्रा तथा शरीर के माध्यम से नारी के व्यक्तित्व को उभारा गया है नारी का सौंदर्य उसके आंतरिक भागों से उभारने का प्रयास किया गया है। आर्य जी की वाँश तकनीक विशेष महत्व रखती है। वाँश तकनीक में जल और रंगों की पारदर्शी परतों के माध्यम से आकृति और वातावरण का निर्माण किया गया है। रंगों के हल्के एवं गहरे प्रभाव से चित्र में गहराई कोमलता और वातावरण संवेदना उत्पन्न की गई है हल्के रंग परते नारी की कोमलता और भावनात्मक संवेदना को व्यक्त करती है। जबकि गहरी तान आकृति के महत्वपूर्ण हिस्सों को उभारती है रंगों के क्रमिक विस्तार से नारी को उसके परिवेश से जोड़ा गया है चित्रकार की नारी आकृतियाँ मौन होते हुए भी संवाद करती हुई प्रतीत होती हैं। वह दर्शक को अपने भावों और जीवन की परिस्थितियों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है। उदाहरण के लिए चित्र सांवरी राधा और कृष्ण प्रतीक्षा शीत ऋतु में गंगा अवतरण चीरहरण राधा के केस सवार थे कृष्ण ओस पी कहाँ रात में नौकाए आदि।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देख पाते हैं कि आदिकाल से ही लगभग सभी कलाकारों ने नारी को अपनी कला का प्रेरणा स्रोत माना है। नारी के विभिन्न रूपों को चित्रित करके नारी के प्रति अपनी श्रद्धा दर्शाई है तथा नारी अंकन में मनोविश्लेषण आत्मक दृष्टिकोण अपनाया है। जिस प्रकार बिना नारी के भगवान की सृष्टि अधूरी है उसी प्रकार एक चित्रकार की कृति भी नारी चित्रण के बिना अधूरी है। अंतर नारी वह ध्रुव है जिसके चारों ओर संपूर्ण समाज चक्कर लगाता है फलस्वरूप चित्रकला जगत में नारी को पर्याप्त महत्व मिला है। प्रो. सुखवीर सिंह सिंघल एवं बद्रीनाथ आर्य के चित्रों में स्त्रियों की स्थिति अंकन किया गया है। के माध्यम से कलाकारों की आंतरिक अभिव्यक्ति का ज्ञात होता है कि वह कलाकार नारी के प्रति कितने संवेदनशील हैं।

संदर्भ सूची

1) राजस्थान पत्रिका परिशिष्ट

- २) वर्मा, डॉक्टर अविनाश बहादुर 1977, भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रकाश डिपो बरेली
- 3) प्रताप रीता 2015 भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
- 4) अग्रवाल डॉक्टर आरए कलाविलास
- 5) मिश्र अवधेश ,” भारतीय समकालीन कला और लखनऊ”